

देवीकुण्ड सागर, बीकानेर के मंदिर : स्थापत्य एवं शिलालेखीय अध्ययन

शशि गोदारा, शोधार्थी, इतिहास विभाग, राजकीय इंगर कॉलेज, बीकानेर
उषा लामरोर, सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय इंगर कॉलेज, बीकानेर
shashigodara1884@gmail.com

सारांश

यह शोध-पत्र बीकानेर स्थित देवीकुण्ड सागर तालाब के मध्य एवं दक्षिणी भाग में स्थित मंदिर-समूह के स्थापत्य, धार्मिक विन्यास तथा शिलालेखीय साक्ष्यों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। उपलब्ध सामग्री के अनुसार परिसर में विभिन्न देवी-देवताओं के लगभग 25 मंदिरों का उल्लेख मिलता है। वि.सं. 1902 के शिलालेख में महाराजा रत्नसिंह द्वारा गणेश, गोपाल तथा अन्य देवमूर्तियों की स्थापना और मंदिर-निर्माण का विवरण मिलता है, जबकि वि.सं. 1902 के अन्य शिलालेख से कालिका देवी, भैरवी देवी और भैरव की प्रतिष्ठा तथा पूर्ववर्ती पादन्यास का उल्लेख मिलता है। वि.सं. 1939 के शिलालेख में महाराजा इंगरसिंह द्वारा इंगरेश्वर महादेव, पार्वती, कार्तिकेय, गणेश, नन्दी तथा 24 ज्योतिर्लिंगों की प्रतिष्ठा का उल्लेख है। स्थापत्य की दृष्टि से लाल-गुलाबी बलुआ पत्थर, संगमरमर, लकड़ी के द्वार, मेहराबदार प्रवेश, गुम्बद, छतरियाँ, नक्काशीदार स्तम्भ और राजस्थानी भित्तिचित्र इस परिसर की प्रमुख विशेषताएँ हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि देवीकुण्ड सागर का मंदिर-समूह बीकानेर की राजकीय धार्मिक परंपरा, शिल्पकला और स्मृति-स्थापत्य के अंतर्संबंध को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।

मुख्य शब्द: देवीकुण्ड सागर, बीकानेर, मंदिर स्थापत्य, शिलालेख, राजपूत वास्तुकला, इंगरेश्वर महादेव, रत्नसिंह, इंगरसिंह

प्रस्तावना

देवीकुण्ड सागर बीकानेर के सागर रोड पर स्थित एक महत्वपूर्ण धार्मिक-सांस्कृतिक परिसर है। उपलब्ध सामग्री के अनुसार यह कल्याणसागर तालाब के उत्तर-पूर्व में स्थित है और तालाब के मध्य तथा दक्षिणी भाग में अनेक मंदिर निर्मित हैं। इन मंदिरों का संबंध बीकानेर के शासक वर्ग, राजपरिवार तथा धार्मिक परंपराओं से जोड़ा गया है। परिसर की विशेषता केवल मंदिरों की संख्या में नहीं, बल्कि उनके सामूहिक विन्यास, जलाशय से संबंध, शिलालेखीय प्रमाण और विविध स्थापत्य-रूपों के सह-अस्तित्व में निहित है। इस अध्ययन का मुख्य आधार उपलब्ध स्थल-विवरण, प्रत्यक्ष अवलोकन और मंदिर परिसरों में वर्णित शिलालेख हैं।

मुख्य विवेचन

1. देवीकुण्ड सागर का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ

‘देवीकुण्डसागर तालाब’ बीकानेर के सागर रोड पर स्थित शरहकजानी क्षेत्र में कल्याणसागर तालाब के उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह स्थान बीकानेर की पूर्व दिशा में 74° 14’ पूर्वी देशान्तर एवं 29° 3’ उत्तरी अक्षांश पर स्थित है। इस विशाल तालाब के मध्य व पास में स्थित मन्दिर अपनी स्थापत्य व कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह स्थान बीकानेर रियासत के शासक वर्ग की स्मृति, परम्परा, धार्मिक आस्था और वास्तुकला का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। “यहां निर्मित मन्दिरों का निर्माण बीकानेर के महाराजा इंगरसिंह, गजसिंह एवं परवर्ती शासकों के साथ-साथ बीकानेर राज्य के कुल सदस्यों द्वारा करवाया गया था।

विभिन्न देवी-देवताओं के लगभग 25 मन्दिर हैं। तालाब के मध्य भाग, दक्षिणी भाग और दक्षिणी-पूर्वी यहाँ भाग में मन्दिरों का निर्माण कार्य किया गया।

देवीकुण्ड सागर तालाब के मध्य स्थित मंदिर-समूह:- तालाब के मध्य लगभग 100 × 100 वर्गफुट के क्षेत्र में मंदिरों का समूह निर्मित है। इस समूह में श्री गणेश, श्री गोपाल, श्री महेश, श्री दिनेश, श्री बद्रीनाथ, श्री नर-नारायण, श्री लक्ष्मी, पंचायती/उद्धवादि तथा नर्मदेश्वर महादेव आदि से संबंधित देवमूर्तियों का धार्मिक विन्यास मिलता है। वर्षाकाल में तालाब में जल भर जाने पर इस मंदिर-समूह का स्थल-संपर्क सीमित हो जाता था; वर्तमान में पश्चिमी तट से पुलनुमा मार्ग द्वारा पहुँच संभव है।

देवीकुण्ड सागर के मध्य भाग में लगभग 100 × 100 वर्गफुट क्षेत्र में मंदिरों के समूह का उल्लेख मिलता है। मध्य समूह में गणेशजी, गोपालजी, महेश-दिनेश, बद्रीनाथ, नर-नारायण, लक्ष्मी तथा पंचायती/उद्धवादि और नर्मदेश्वर महादेव आदि से संबद्ध देवमूर्तियों का विन्यास प्रस्तुत किया गया है। यह सामूहिक स्थापत्य धार्मिक बहुलता और राजकीय संरक्षण के समन्वय को दर्शाता है।

2. वि.सं. 1902 के शिलालेख और रत्नसिंह कालीन मंदिर-निर्माण

सारांश- विक्रम संवत् 1902 के इस शिलालेख के अनुसार बीकानेर के महाराजा श्री रत्नसिंहजी ने विक्रम संवत् 1902 मार्गशीर्ष सुदी-9 (सोमवार, 8 दिसम्बर, 1845 ई.) को भगवान श्री गणेश व श्री गोपाल मंदिर का पादन्यास किया तथा इसी क्रम में महाराजा रत्नसिंह उसी वर्ष में फाल्गुन सुदी-12, (सोमवार, 9 मार्च, 1846 ई.) को भगवान श्री गणेश श्री गोपाल, श्री महेश, श्री दिनेश, श्री बद्रीनारायण (बद्रीनाथ), श्री नर-नारायण, श्री लक्ष्मीजी (श्री पंचायतन) उद्धवजी, नरबदेश्वर लिंग, गिरजा व नंदिगण सहित कुल 6 मंदिर निर्मित करवा कर वर्णित देव-देवियों की मूर्तिय शास्त्रोक्त विधि से प्रतिष्ठित करवाई।

भगवान श्री गणेश को नमस्कार है। मनोकामना की सिद्धि के लिए देवताओं और असुरों दोनों के द्वारा जिनकी पूजा की जाती है, तथा सभी बाध्यों को नष्ट करने वाले हैं, उन गणों के स्वामी भगवान गणेश को मैं नमन करता हूँ, राजाओं में श्रेष्ठ महाराजा रत्नसिंह की विजय हो। उनकी गहरी भक्ति करुणा के सागर, गायों के रक्षक (गोपाल) और भगवान गणेश सहित सभी देवी-देवताओं में हमेशा दिखाई देती है। उन्होंने यहां गणेश जी और श्री हरि आदि देवताओं के धाम स्थापित किए हैं। सूर्य वंश के श्रेष्ठ और सत्यवादी राजाओं में अग्रगण्य अपनी प्रजा के कष्टों और आसुओं को दूर करने वाले तथा पृथ्वी के समस्त राजाओं में मणी के समान श्रेष्ठ महाराजा रत्नसिंह नाम से सुशोभित महाराजा सूरत सिंह के पुत्र जो सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने वाले तथा राजाओं में मणि के समान श्रेष्ठ महाराजा रत्नसिंह जी अपनी प्रजा के दुखों को दूर करने वाले हैं वे इस धरती पर साक्षात् भगवान विष्णु के समान कल्याणकारी और तेजस्वी स्वरूप से भूमि पर प्रकट हुए हैं। विक्रम संवत् 1902 के मार्गशीर्ष महीने के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को श्री गणेश और श्री गोपाल आदि के इस मंदिर की नींव रखने का कार्य किया गया था। इसके बाद इस अत्यन्त कल्याणकारी और शुभ वर्ष विक्रम संवत् 1902 और शक संवत् 1767 के चलते सभी महीनों में उत्तम माने जाने वाले पवित्र फाल्गुन महीने के शुभ शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को सोमवार के दिन मूर्तियों की स्थापना की गई। उस समय ज्योतिष गणना के अनुसार पचांग की पूर्ण शुद्धि देखकर शुभ मुहूर्त चुना गया। समय 50 घटी और 5 पल, नक्षत्र-पुष्य नक्षत्र 25 घटी 56 पल अतिगडू, योग 53 घटी 52 पल बबकरण। राजाओं के सिरसौर श्री महाराजाधिराज, महाराजा श्री रत्नसिंह जी द्वारा श्री गणेश,

श्रीगोपाल. श्री महेश. श्री दिनेश. श्री लक्ष्मी जी श्री बद्रीनारायण (श्री पंचायतन) नर-नारायण. उनके सेवक श्री उदव आदि की मूर्तियां. श्री नर्मदेश्वर शिवलिंग. माता पार्वती (गिरजा) और नंदी गण सहित सभी देवी-देवताओं की मूर्तियां शास्त्रोक्त विधि-विधान और एक अन्य उत्सव के साथ मंदिरों में प्राण प्रतिष्ठा की गई। यह मन्दिर यहाँ के देवी-देवता और राजा की यह कीर्ति हमेशा-हमेशा लिए (चिरकाल तक) सुरक्षित और स्थापित रहे सबका कल्याण हो और सभी का मंगल व शुभ हो।

इस शिलालेख के अनुसार देवीकुण्ड सागर के मध्य स्थित गणेश-गोपाल आदि मंदिर-समूह का पादन्यास एवं देवप्रतिष्ठा महाराजा रत्नसिंह के काल में वि.सं. 1902 में सम्पन्न हुई।

शिलालेखीय साक्ष्य के अनुसार वि.सं. 1902 में गणेश-गोपाल आदि मंदिरों की स्थापना तथा विभिन्न देवमूर्तियों की शास्त्रोक्त प्रतिष्ठा का उल्लेख मिलता है।

3. देवीकुण्ड सागर के मध्य स्थित मंदिर

यह मन्दिर/परिसर देवीकुण्ड कुण्ड सागर तालाब के मध्य स्थित है। वर्तमान में इस मन्दिर तक पहुँचने के लिए पुल या ऊँची सड़क बना दी गई है। यह मन्दिर लाल-गुलाबी बलुआ पत्थर से निर्मित है। परिसर की बाहरी हिस्से में सुदृढ़ चारदीवारी का निर्माण किया गया है। दीवार के शीर्ष जालीदार एवं कंगूरेदार मुंडेर बनाई गई है। मंदिर का बाहरी प्रवेश द्वार वर्तमान में बनवाया गया है। जो एक विशाल और ऊँचे स्तम्भों से घिरे लोहे का गेट है।

मुख्य मन्दिर का प्रवेश द्वार पारम्परिक काष्ठ कला का उत्कृष्ट नमूना है। भारी लकड़ी के इस किवाड़ के चारों ओर पत्थर की सुन्दर नक्काशीदार चैखट बनाई गई है। चैखट के निचले हिस्से पर स्तम्भ पीठ की नक्काशी है। द्वार की स्तम्भों पर बैल-बूटे. पुष्प-वलरी और ज्यामितीय आकृतियों को बहुत ही बारीकी से उकेरा गया है। द्वार के स्तम्भ पर आले की सुन्दर कलाकृति दिखाई देती है। द्वार के ऊपरी हिस्से पर कमल के फूल जैसी आकृतियों उकेरी गई है।

प्रवेश करने के पश्चात् तीन सुन्दर मेहराब द्वार प्रवेश द्वार है जो अर्द्धवृत्ताकार और नुकीले हैं। जो प्राचीन भारतीय-इस्लामी राजपूत वास्तुकला का मिश्रण प्रतीत होता है। द्वार को पार करते ही एक विशाल और शांत खुला आंगन है। इस प्रांगण की मुख्य विशेषता इसकी अनूठी स्थापत्य की योजना है। आंगन के दो तरफ 3-3 छोटे गर्भगृहों की श्रृंखला बनी हुई है। आंगन के तीसरी तरफ प्रवेश द्वार और चौथी तरफ मन्दिर का मुख्य पुराना दरवाजा है। जो तालाब की तरफ खुलता है। प्रत्येक गर्भगृह के आगे छोरा बरामदा और बरामदा आंगन में खुलता है। प्रत्येक के गर्भगृह के बरामदे में तीन मेहराबदार द्वार हैं। जिनमें दो इन स्तम्भों की विशेषता हैं। ये युग्म में हैं। जिन पर सीधे व उल्टे कमल व धारीदार सुन्दर नक्काशी की गई है। द्वारों को बन्द कर दिया गया है। पहले व चौथे बरामदे के तीनों मेहराबदार द्वार खुले हुए हैं। शिलालेख व पर्यटन विभाग द्वारा जारी लेख और प्रत्यक्ष मन्दिर अवलोकन से ज्ञात होता है कि इस मन्दिर में बांयी ओर 3 और दायी ओर 3 मन्दिर बने हुए हैं। प्रत्येक गर्भगृह के बाद परिक्रमा के लिए परिक्रमा पथ बनाया गया है। इन मन्दिरों का विवरण निम्न है:-

3.1 दाहिनी ओर स्थित मंदिर

(1) **गणेश मन्दिर:-** गर्भगृह का द्वार बहुत ही साधारण है। द्वार का आकार आयताकार है और काष्ठ निर्मित दरवाजा है। भगवान श्री गणेश यहां एक ऊँचे जगती (चबूतरे) और भव्य चैकी पर विराजमान है।

सफेद संगमरमर से निर्मित है। इनकी सूंड बायीं तरफ धूमी हुई है। इनके इस स्वरूप को वाममुखी गणेश कहते हैं। धार्मिक मान्यता है कि पुजारी विकास के अनुसार वाममुखी गणेश जी की पूजा गृहस्थ जीवन व घरों के लिए अत्यन्त शुभ और शांत फल देने वाली मानी जाती है।

मन्दिर की दीवारों में आले बने हुए जिनमें फूलों की चिराकारी की गई है। गर्भगृह की दीवारों पर पारम्परिक रंग-बिरंगी राजस्थानी स्टाइल में बैल-बूटे और छत पर बादले बने हुए हैं। जिनमें सफेद व नीले रंग का प्रयोग किया गया है। श्री गणेश जी के पीछे की दीवार पर पर्दा लगाया गया है। गर्भगृह की ऊपरी छत पर अर्द्धवृत्ताकार गुम्बद बनाया गया है उस पर कलश व ध्वजा लगाई गई है।

(2) बदरीनाथ की पंचायत:- इस मन्दिर के गर्भगृह का आकार आयताकार। साधारण व काष्ठ का दरवाजा है। गर्भगृह में पहाड़ी आकृतियों से उत्कीर्ण संगमरमर से निर्मित एक ऊंचा चबूतरा है जिस पर बदरीनाथ की पंचायत बैठी है। इन पंचायत में बदरीनाथ जी माता लक्ष्मी जी और नर-नारायण जी की मूर्तियां सामने और उनके बायें और दायीं तरफ की दीवार के चबूतरे पर कुबेर उद्वव. गरुड़ और नारद जी की मूर्तियां हैं। ये मूर्तियां काले पत्थर से निर्मित हैं। दीवारों के किनारों पर नीले. लाल. और पीले रंग की आयताकार आकृतियां बनाई गईं जिनमें छोटे-छोटे फूल बनाए गए हैं। गर्भगृह की आन्तरिक छत पर आयताकार आकृतियां और उनके अन्दर विभिन्न रंगों (लाल. नीला. पीला) के बादलों के चित्र बनाए गए हैं। ज्यामितीय पैटर्न. फूल. बैल-बूटियां और देवताओं के चित्र दीवारों पर बनाये गए हैं। इन चित्रों में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया गया है। गर्भगृह की छत पर अर्द्धवृत्ताकार गुम्बद का निर्माण किया गया है।

3.2 बाईं ओर स्थित मंदिर

(3) महालक्ष्मी मंदिर:- इस मंदिर का गर्भगृह का आकार आयताकार। साधारण व लकड़ी से बना दरवाजा है। महालक्ष्मी माता की मूर्ति ऊंचे चबूतरे पर चौकी पर विराजमान है। माता की मूर्ति काले काले पत्थर से निर्मित है। चबूतरे पर छोटी-छोटी पहाड़ियों की आकृति बनी हुई है।

चबूतरा सफेद संगमरमर के पत्थर से बनाया गया है। गर्भगृह की छत व दीवारों के ऊपरी किनारों पर आयताकार आकृतियां बनाई गई हैं। जिसमें नीले. पीले और लाल रंगों का प्रयोग किया गया है। छत पर आयताकार आकृतियों के बीच में विभिन्न रंगों के बादलों से चित्रकारी की गई है। प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया गया है। दीवारों पर आले. देवी- देवताओं के चित्र. फूलों की बैसे आदि चित्रित की गई हैं। गर्भगृह की छत पर अर्द्धवृत्ताकार गुम्बद बनाया गया है।

परिसर/आंगन के बायीं ओर स्थित मन्दिर:-

(1) गणेश मन्दिर:- यह मन्दिर बायीं ओर बनाए गए मन्दिरों में सबसे प्रथम मन्दिर है। इसमें गणेशजी की मूर्ति ऊंचे चबूतरे पर स्थित है और सूंड बायीं ओर ही है। इस मन्दिर दायीं ओर स्थित श्री गणेश मन्दिर की तुलना नकल है और खास विशेषता यह है कि इन दोनों मन्दिरों के गर्भगृह एक-दूसरे के आमने-सामने हैं। ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है। गर्भगृह की छत पर गुम्बद बनाया गया है।

(2) महादेव जी का मन्दिर:- इस मन्दिर का गर्भगृह का द्वार आयताकार बिना साधारण. और द्वार का दरवाजा काष्ठ का बना हुआ है। गर्भगृह के बीच आंगन के बीच में श्री महादेव जी का प्रतीक शिवलिंग विराजमान है और नाग देवता की छत्र भी है। शिवलिंग के पास मां भगवती जी की मूर्ति स्थापित है. जो गुलाबी. नीले व लाल वस्त्रों से सुशोभित है। माता की मूर्ति सफेद पत्थर से निर्मित है। इस गर्भगृह पर एक

ऊंचा चबूतरा निर्मित है जहां माता पार्वती के पुत्र श्री गणेश जी की तस्वीर स्थापित है। गर्भगृह के बाहर दो-दो नन्दी महाराज विराजमान है। गर्भगृह की दीवारों और छत्रों पर राजस्थानी चित्रकारी। फूलों के पैटर्न और देवताओं के भित्ति चित्र बने हुए हैं। गर्भगृह की छत पर गुम्बद बनाया गया

(3) सूर्य मन्दिर:- इस मन्दिर का गर्भगृह का आकार आयताकार। साधारण व काष्ठ का दरवाजा है। इसमें सूर्य भगवान की मूर्ति ऊंचे चबूतरे पर स्थापित की गई है। मूर्ति की पीछे उस पर की चौकी पर दीवार पर छोटे मन्दिर का रूप देते हुए आला जिसमें लहरदार आकृति बनाई गई है और इसमें पीछे की दीवार पर फूलों-पत्तियों व ताते की आकृतियाँ चित्रित की गई हैं। इन चित्रों में प्राकृत रंगों का प्रयोग किया गया है। आले के ठीक ऊपर एक चौड़ी पट्टी है। जिसमें नीले और लाल रंग के सुंदर ज्यामितीय और फूलों के पैटर्न बने हुए हैं। आले के दोनों तरफ भगवान श्री कृष्ण को गाय के साथ चित्रित किया गया है। गर्भगृह की दीवारों पर बैल-बुटियां बनाई गई हैं। छत पर प्राकृतिक रंगों से आयताकार आकृतियां बनाकर विभिन्न रंगों (लाल, नीला, पीला, भूरा आदि) से बादलों का निर्माण किया गया है। गर्भगृह की छत पर गुम्बद बनाया गया है।

वर्तमान में इसकी जर्जर स्थिति को देखते हुए केवल पूजा के समय ही खोला जाता है। पूजारी जी गणेश के अनुसार यहाँ राजा-महाराजा लोग कल्याण सागर में अन्तिम संस्कार करने के पश्चात् देवी कुण्ड सागर में स्नान करके यहां पूजा पाठ करते थे। इस मन्दिर के नीचे एक परिसर बना हुआ है जहाँ से पहले मन्दिर में प्रवेश किया जाता था। जो वर्तमान में बंद है।

4. 'देवीकुण्ड सागर तालाब' के दक्षिण स्थित मन्दिर:-

देवीकुण्ड सागर तालाब के दक्षिण भाग में एक ही परिसर में दो मन्दिर स्थित हैं। दोनों का प्रवेश द्वार भी एक ही है। ये दो मन्दिर हैं-

1. कालिका देवी मंदिर
2. डूंगरेश्वर महादेव मंदिर

दक्षिणी भाग के कालिका देवी एवं डूंगरेश्वर महादेव मंदिर

देवीकुण्ड सागर के दक्षिणी भाग में एक ही परिसर के भीतर कालिका देवी और डूंगरेश्वर महादेव के मंदिर स्थित हैं। दोनों मंदिरों के लिए साझा प्रवेश व्यवस्था दिखाई देती है। दक्षिणी परिसर की विशेषता यह है कि यहाँ शक्ति और शैव उपासना की परंपराएँ निकटवर्ती स्थापत्य विन्यास में अभिव्यक्त होती हैं। उपलब्ध शिलालेखीय प्रमाणों से एक ओर कालिका देवी मंदिर की पादन्यास-परंपरा को महाराजा गजसिंह से जोड़ा जाता है, वहीं मूर्ति-प्रतिष्ठा एवं मंदिर-व्यवस्था को महाराजा रत्नसिंह के काल से जोड़ा गया है। डूंगरेश्वर महादेव मंदिर का शिलालेख महाराजा डूंगरसिंह के काल में हुए निर्माण, प्रतिष्ठा तथा 24 ज्योतिर्लिंगों के समवाय को प्रमाणित करता है।

4.1 कालिका देवी मंदिर : शिलालेखीय साक्ष्य, अनुवाद, सारांश एवं स्थापत्य

स्थल एवं शिलालेखीय स्थिति:- कालिका देवी मंदिर देवीकुण्ड सागर के दक्षिणी भाग में स्थित है। गर्भगृह के दायीं ओर संगमरमर की पट्टिका पर संस्कृत भाषा में शिलालेख उत्कीर्ण है। उपलब्ध प्रतिलिपि के अनुसार इसमें श्री गणेश की स्तुति के पश्चात् पूर्ववर्ती शासकों की वंशपरंपरा, मंदिर के पादन्यास और वि.सं. 1902 में कालिका देवी, भैरवी देवी तथा भैरव की मूर्तियों की प्रतिष्ठा का उल्लेख किया गया है।

शिलालेख का चयनित मूल पाठ:- “॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितोऽयं सुरासुरैः सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्रीगणाधिपतये नमः ॥ ... तेन श्री महाराजाधिराज श्री गजसिंहजी केन पादन्यासपूर्वकम् एषः श्रीदेव्याः प्रासादः कारितः ... संवत् 1902 शाके 1767 ... फाल्गुन शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां बुधवासरे ... श्री भैरवी देव्याः मूर्तिः, श्री कालिका देव्याः मूर्तिः, श्री भैरव मूर्तिश्च महोत्सवेन शास्त्रोक्तविधिना प्रतिष्ठापिताः ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥”

अनुवाद:- श्री गणेश को नमस्कार है। सभी देवताओं और असुरों द्वारा इच्छित कार्यों की सिद्धि के लिए पूजित तथा समस्त विघ्नों का नाश करने वाले गणाधिपति को नमन किया गया है। प्रशस्ति में विक्रमसिंह, आनंदसिंह और गजसिंह की राजवंशीय परंपरा का उल्लेख करते हुए गजसिंह को विष्णुभक्ति में अनुरक्त, सिंह के समान पराक्रमी तथा राजाओं में श्रेष्ठ बताया गया है। उन्हीं महाराजाधिराज गजसिंह द्वारा पादन्यास कराया जाकर देवी का यह प्रासाद निर्मित कराया गया। आगे उनके पौत्र महाराजाधिराज राजा राजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि श्री रत्नसिंह वर्मा को देवी के चरणकमलों का परम भक्त बताते हुए वि.सं. 1902, शाके 1767 के फाल्गुन शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी, बुधवार के दिन, शास्त्रोक्त विधि और शुभ मुहूर्त में श्री भैरवी देवी, श्री कालिका देवी तथा श्री भैरव की मूर्तियों की महोत्सवपूर्वक प्रतिष्ठा का उल्लेख किया गया है। अंत में श्रीलक्ष्मी के वास, शुभता और सर्वकल्याण की मंगलकामना की गई है।

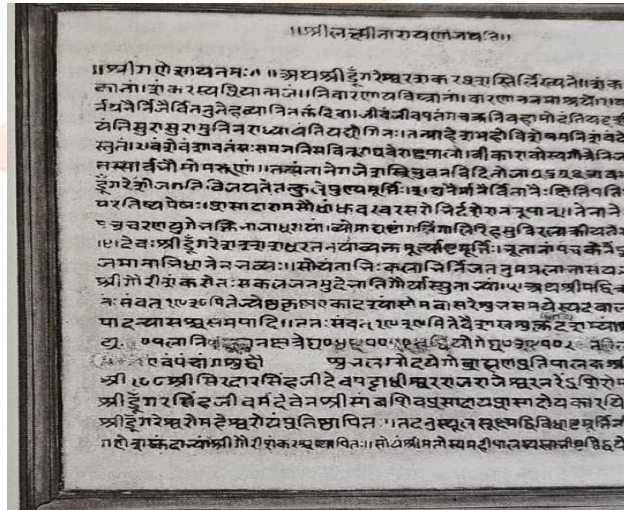
सारांश:- कालिका देवी मंदिर का शिलालेख केवल मूर्ति-प्रतिष्ठा की तिथि का अभिलेख नहीं है, बल्कि यह बीकानेर राजवंश की धार्मिक संरक्षण-परंपरा को भी रेखांकित करता है। शिलालेखीय विवरण से स्पष्ट होता है कि मंदिर की पूर्ववर्ती पादन्यास-परंपरा महाराजा गजसिंह से संबंधित थी, जबकि वि.सं. 1902 में महाराजा रत्नसिंह ने कालिका देवी, भैरवी देवी और भैरव की मूर्तियों की प्रतिष्ठा शास्त्रोक्त विधि से करवाई। इस प्रकार मंदिर के निर्माण और प्रतिष्ठा में दो राजकीय चरणों की निरंतरता दिखाई देती है। यह तथ्य देवीकुण्ड सागर के दक्षिणी परिसर को राजकीय शक्ति, शाक्त आस्था और स्मृति-स्थापत्य के परस्पर संबंध के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण बनाता है।

स्थापत्य एवं कला:- कालिका देवी मंदिर का विन्यास मुख्यतः दो भागों—गर्भगृह और उससे संबद्ध सभामंडप/बरामदे—में समझा जा सकता है। सभामंडप की छत नक्काशीदार स्तम्भों पर आधारित है। मंदिर में पाँच मेहराबदार द्वार हैं, जिनमें तीन गर्भगृह के सामने तथा दो पार्श्व दिशाओं में स्थित हैं। मेहराब युग्म तथा एकल स्तम्भों पर टिके हैं और स्तम्भों पर सीधे तथा उल्टे कमल की आकृतियों का अलंकरण दिखाई देता है। यह अलंकरण स्थानीय राजस्थानी शिल्प परंपरा को दर्शाता है। गर्भगृह का प्रवेश-द्वार अपेक्षाकृत सरल तथा काष्ठ निर्मित है। गर्भगृह में ऊँचे चबूतरे पर तीन मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं—मध्य में माँ कालिका देवी, तथा दोनों ओर भैरवी देवी और भैरव। कालिका देवी की प्रतिमा काले पत्थर और भैरव की प्रतिमा श्वेत पत्थर से निर्मित बताई गई है। चबूतरे पर कंगूरेनुमा अलंकरण, त्रिशूल-चिह्न, निचले भाग में नक्काशीदार पट्टिकाएँ तथा खाँचे निर्मित हैं। गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा-पथ मंदिर की अनुष्ठानिक योजना को पूर्ण करता है। समग्र रूप से मंदिर का स्थापत्य शक्ति-उपासना, स्थानीय शिल्प, मेहराबदार संरचना और काष्ठ-शिल्प के समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

4.2 डूंगरेश्वर महादेव मंदिर : स्थापना, शिलालेख, अनुवाद, सारांश एवं स्थापत्य

स्थल-परिचय:- डूंगरेश्वर महादेव मंदिर कालिका देवी मंदिर के दायीं ओर स्थित है। इसकी नींव जलाशय क्षेत्र से संबद्ध है और वर्षाकाल में मंदिर के दोनों ओर जल दिखाई देता है। मंदिर परिसर लाल बलुआ पत्थर की परंपरा से संबद्ध है। गर्भगृह के दायीं ओर स्थापित संगमरमर की पट्टिका पर संस्कृत का प्रशस्ति-लेख उत्कीर्ण है। उपलब्ध स्रोत में इस लेख को वि.सं. 1939 का “डूंगरेश्वर शिव परिवार मंदिर लेख” कहा गया है।

शिलालेख का संदर्भ:- लेख के आरंभ में श्री लक्ष्मीनारायण और श्री गणेश की स्तुति की गई है। इसके पश्चात् तिथि, नक्षत्र, योग, करण और पंचांग की शुद्धता के साथ शुभ मुहूर्त में डूंगरेश्वर महेश्वर, पार्वती, गौरी-शंकर, 12 स्थूल और 12 सूक्ष्म ज्योतिर्लिंग, स्वामी कार्तिकेय, गणेश तथा नंदीश्वर सहित मंदिर की प्रतिष्ठा का विधान वर्णित है। लेख की अंतिम पंक्तियों में महाराजा डूंगरसिंह की प्रशस्ति तथा शास्त्री कन्हैयालाल को प्रशस्ति-कर्ता के रूप में अंकित किया गया है।



चित्र 1. देवीकुण्ड सागर, बीकानेर : डूंगरेश्वर महादेव मंदिर प्रशस्ति-लेख की उपलब्ध स्रोत-प्रतिमा।

अनुवाद:- श्री लक्ष्मीनारायण की जय हो। श्री गणेश को नमस्कार है। शुभ कार्यों में सर्वप्रथम पूजनीय गणाधिपति का स्मरण करके इस प्रशस्ति में राजा के यश का वर्णन किया गया है। वि.सं. 1939 तथा शाके 1804 में आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि, रविवार और शुभ पंचांग-योग में, निश्चित मुहूर्त पर सर्वात्मस्वरूप श्री डूंगरेश्वर महेश्वर की माता पार्वती सहित प्रतिष्ठा कराई गई। इसी क्रम में गौरी-शंकर स्वरूप, पार्वती के दोनों पार्श्वों में 12 स्थूल और 12 सूक्ष्म ज्योतिर्लिंग, स्वामी कार्तिकेय, श्री गणेश, नंदीश्वर और संबंधित देवालय की प्रतिष्ठा भी सम्पन्न की गई। यह कार्य राजराजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि महाराजा श्री डूंगरसिंह वर्मा ने समस्त जगत के उपकार और धार्मिक कल्याण की भावना से कराया। लेख में शिव के शैवागमिक स्वरूप, तीर्थों में उनके ज्योतिर्मय प्राकट्य और अनेक रूपों को एक स्थान पर दर्शाने की धार्मिक अवधारणा का वर्णन है। प्रशस्ति में महाराजा डूंगरसिंह को राठौड़ वंश का मुकुटमणि, मरुस्थल के अधिपति तथा भक्तिभाव से डूंगरेश्वर शिव की प्रतिष्ठा कराने वाला धर्मनिष्ठ शासक कहा गया है।

सारांश:- यह शिलालेख संगमरमर की पट्टिका पर संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण प्रशस्ति है, जिसमें 21 पंक्तियों का उल्लेख उपलब्ध स्रोत में मिलता है। वि.सं. 1939 के इस अभिलेख में महाराजा डूंगरसिंह

द्वारा श्री डूंगरेश्वर महेश्वर महादेव, माता पार्वती, गौरी-शंकर, स्वामी कार्तिकेय, श्री गणेश और नंदीश्वर आदि की प्रतिष्ठा तथा पार्वती के दोनों पार्श्वों में 12-12 स्थूल और सूक्ष्म ज्योतिर्लिंगों की स्थापना का विवरण है। इस प्रकार कुल 24 ज्योतिर्लिंगों को एक ही धार्मिक परिसर में समेकित करना मंदिर की धार्मिक अवधारणा को विशिष्ट बनाता है। शिलालेख के अंतिम भाग में महाराजा डूंगरसिंह का प्रशस्ति-गान तथा शास्त्री कन्हैयालाल का नाम मिलता है।

स्थापत्य एवं कला:- डूंगरेश्वर महादेव मंदिर में भव्य मेहराबदार प्रवेश-द्वार इसकी प्रमुख स्थापत्य विशेषता है। मुख्य प्रवेश पर लहरदार मेहराब नक्काशीदार स्तम्भों पर आधारित है; ऐसे तीन मेहराबदार द्वारों का विन्यास उपलब्ध स्थल-विवरण में मिलता है, जिनमें दो पर जालीदार लोहे के फाटक लगाए गए हैं। वर्तमान सतह पर लाल और सफेद रंग की पुताई मंदिर की बाहरी आकृति को उभारती है। मंदिर का फर्श, परिक्रमा-पथ की दीवारें और गर्भगृह परिसर का निचला भाग उच्च गुणवत्ता वाले ग्रेनाइट से निर्मित/पुनर्निर्मित किए गए हैं। उपलब्ध स्मृति-शिलालेखीय जानकारी से यह भी ज्ञात होता है कि ग्रेनाइट कार्य स्वर्गीय श्री किशनलाल अग्रवाल की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी मीना देवी तथा सुपुत्रों द्वारा कराया गया। गर्भगृह सुनियोजित एवं सममित कक्ष के रूप में स्थित है। दीवारों पर लहरदार आकृतियाँ और पुष्प अलंकरण इसे सजावटी स्वरूप प्रदान करते हैं। गर्भगृह की चौखट पर लाल-सफेद रंग का अलंकरण तथा काष्ठ-द्वार मंदिर के आंतरिक रूप को विशिष्ट बनाते हैं। भीतर डूंगरेश्वर महादेव का विशाल शिवलिंग स्थापित है, जिसका अधिष्ठान बहुपंखुड़ी कमलाकार रूप में तराशा गया है और इसे हल्के पीले-सफेद मकराना संगमरमर से निर्मित बताया गया है। शिवलिंग के समीप नागदेवता की धातु प्रतिमा है। एक ऊँचे चबूतरे पर माता पार्वती तथा 24 ज्योतिर्लिंगों की स्थापना की गई है, जबकि गणेश और कार्तिकेय के लिए दीवारों में आले बनाए गए हैं। इस प्रकार डूंगरेश्वर मंदिर का स्थापत्य धार्मिक प्रतीक-समूह, शिल्प अलंकरण, मेहराबदार प्रवेश, संगमरमर, ग्रेनाइट और काष्ठ के समन्वित प्रयोग से निर्मित बहुस्तरीय दृश्य-अनुभव प्रस्तुत करता है।

शिलालेख और स्थापत्य का संयुक्त विश्लेषण:- कालिका देवी और डूंगरेश्वर महादेव के दक्षिणी मंदिर-समूह को साथ रखकर देखने पर देवीकुण्ड सागर में राजकीय धार्मिक संरक्षण की दीर्घकालिक परंपरा स्पष्ट होती है। कालिका देवी मंदिर के शिलालेख में गजसिंह से जुड़ा पादन्यास और रत्नसिंह के काल की मूर्ति-प्रतिष्ठा का क्रम दिखाई देता है, जबकि डूंगरेश्वर शिलालेख में डूंगरसिंह के समय शैव धार्मिक प्रतिमानों के व्यापक समावेशन का प्रमाण मिलता है। एक ही परिसर में शक्ति, भैरव और शैव परंपराओं का संयोजन धार्मिक सह-अस्तित्व तथा राजकीय संरक्षण की बहुलता को व्यक्त करता है। स्थापत्य की दृष्टि से लाल बलुआ पत्थर, संगमरमर, काष्ठ-द्वार, नक्काशीदार स्तम्भ और मेहराबदार प्रवेश-रचना स्थानीय राजस्थानी निर्माण परंपरा को रेखांकित करते हैं।

5. समेकित स्थापत्य एवं शिलालेखीय विश्लेषण

उपलब्ध शिलालेखीय और स्थल-अवलोकन सामग्री से देवीकुण्ड सागर के मंदिर-समूह में जलाशय, मंदिर और मार्ग-व्यवस्था का घनिष्ठ संबंध दिखाई देता है। मध्य भाग के मंदिर जलाशय के भीतर/मध्य क्षेत्र में स्थित हैं और दक्षिणी भाग के कालिका देवी तथा डूंगरेश्वर महादेव मंदिर भी जल-परिदृश्य से प्रत्यक्ष

रूप से जुड़े हुए हैं। तालाब के जलस्तर में वृद्धि के समय पहुँच की कठिनाई इस स्थल की धार्मिक-सांस्कृतिक उपयोगिता को जल-पर्यावरण के साथ जोड़ती है।

मंदिरों की योजना में गर्भगृह, बरामदे/सभामंडप, परिक्रमा-पथ और खुले आँगन का संयोजन मिलता है। दक्षिणी परिसर में कालिका देवी मंदिर के पाँच मेहराबदार द्वार तथा इंग्रेश्वर मंदिर के लहरदार मेहराबदार प्रवेश-द्वार इस स्थापत्य भाषा की विविधता को दर्शाते हैं। काष्ठ-द्वार, नक्काशीदार स्तम्भ, कमल-मूलक अलंकरण और गुम्बद स्थानीय राजस्थानी परंपरा के साथ व्यापक उत्तर भारतीय तथा भारतीय-इस्लामी स्थापत्य प्रभावों के सह-अस्तित्व को व्यक्त करते हैं।

आंतरिक भागों में राजस्थानी शैली की भित्तिचित्र परंपरा, पुष्प-बेलबूटे, ज्यामितीय प्रतिरूप और प्राकृतिक रंगों का प्रयोग मंदिर को केवल पूजा-स्थल न रखकर कलात्मक अभिव्यक्ति का केंद्र बनाता है।

इंग्रेश्वर महादेव मंदिर के संदर्भ में वि.सं. 1939 का शिलालेख मंदिर-स्थापत्य को राजकीय धार्मिक संरक्षण से जोड़ता है और 24 ज्योतिर्लिंगों के एकीकृत विन्यास को विशिष्ट धार्मिक अवधारणा के रूप में दर्ज करता है। कालिका देवी के शिलालेख से वि.सं. 1902 में शक्ति-उपासना से संबंधित प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा और पूर्ववर्ती पादन्यास की परंपरा का प्रमाण मिलता है। इन दोनों अभिलेखों को साथ पढ़ने पर देवीकुण्ड सागर का दक्षिणी परिसर बीकानेर की राजकीय धार्मिक स्मृति की दीर्घकालिकता को व्यक्त करता है।

निष्कर्ष

देवीकुण्ड सागर का मंदिर-समूह बीकानेर की धार्मिक, राजकीय और स्थापत्य परंपराओं का महत्वपूर्ण संगम प्रस्तुत करता है। वि.सं. 1902 के शिलालेख गणेश-गोपाल तथा संबंधित देवमूर्तियों की स्थापना और कालिका देवी, भैरवी देवी तथा भैरव की प्रतिष्ठा की जानकारी देते हैं, जबकि वि.सं. 1939 का शिलालेख इंग्रेश्वर महादेव, पार्वती, कार्तिकेय, गणेश, नंदीश्वर और 24 ज्योतिर्लिंगों की प्रतिष्ठा का प्रमाण प्रस्तुत करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि देवीकुण्ड सागर का धार्मिक परिसर अलग-अलग समयों में राजकीय संरक्षण और धार्मिक संकल्पनाओं के आधार पर विकसित होता रहा। स्थापत्य की दृष्टि से लाल-गुलाबी बलुआ पत्थर, संगमरमर, काष्ठ, ग्रेनाइट, मेहराब, गुम्बद, नक्काशीदार स्तम्भ, भित्तिचित्र तथा पुष्प-ज्यामितीय अलंकरणों का समन्वय इसे बहुस्तरीय कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

संदर्भ-सूची

- चुरवाला, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व्यास। रियासतकालीन बीकानेर के शिलालेख। — देवीकुण्ड सागर स्थित कालिका देवी, भैरवी देवी, भैरव, इंग्रेश्वर महादेव तथा अन्य मंदिरों के शिलालेखीय पाठ एवं विवरण के लिए प्रमुख स्रोत।
- देवीकुण्ड सागर, बीकानेर। वि.सं. 1902 का गणेश-गोपाल आदि मंदिर-समूह संबंधी शिलालेख — पादन्यास, मंदिर-निर्माण तथा देवमूर्ति-प्रतिष्ठा संबंधी प्रमाण।
- देवीकुण्ड सागर, बीकानेर। वि.सं. 1902 का कालिका देवी-भैरवी देवी-भैरव शिलालेख — पादन्यास तथा मूर्ति-प्रतिष्ठा संबंधी प्रमाण।
- देवीकुण्ड सागर, बीकानेर। वि.सं. 1939 का इंग्रेश्वर महादेव प्रशस्ति-शिलालेख — इंग्रेश्वर महादेव, पार्वती, कार्तिकेय, गणेश, नंदीश्वर एवं 24 ज्योतिर्लिंगों की प्रतिष्ठा संबंधी प्रमाण।
- उपलब्ध स्थल-अवलोकन एवं मंदिर परिसर का स्थापत्य विवरण, मूल शोध-सामग्री में संकलित। बीकानेर पर्यटन विभाग से संबंधित विवरण, जैसा कि मूल शोध-सामग्री में संदर्भित है।